SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः

समग्र शिक्षा
सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

NIPUN BHARAT

खोला खोला मैं

1

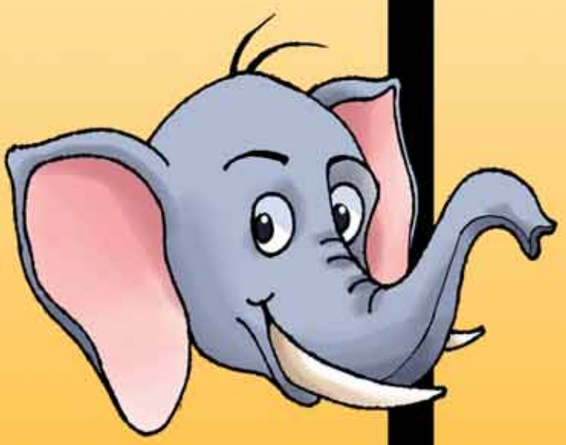

आई.एस.बी.एन. : 978-93-93667-28-1

© राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली

जनवरी 2022

8200 (प्रतियाँ)

प्रकाशितः राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली
मुद्रितः चंदू प्रेस, नई दिल्ली–110092

समग्र शिक्षा
सबको शिक्षा, अच्छी शिक्षा

NIPUN BHARAT

खोला खोला मैं-1

मुख्य सलाहकार
श्री एच. राजेश प्रसाद, प्रधान सचिव शिक्षा
श्री हिमांशु गुप्ता, निदेशक शिक्षा, जी.एन.सी.टी. दिल्ली
श्री रजनीश सिंह, निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

शैक्षिक सलाहकार
डॉ. नाहर सिंह, सह निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

समन्वय और संपादन
डॉ. रितिका डबास, वरिष्ठ प्रवक्ता, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली
डॉ. मीना सहरावत, डाइट, घुम्मनहेड़ा, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

लेखक
हिना, अध्यापिका, सैनफोर्ट वर्ल्ड स्कूल, नोएडा
गरिमा गुप्ता, सलाहकार, एन.सी.टी.ई.
हरलीन कौर, अध्यापिका, माउट कारमल स्कूल, सैक्टर–22, द्वारका, दिल्ली

चित्रांकन व लेआउट
अनिल कुमार परगनिहा

प्रकाशन विभाग
डॉ. मुकेश यादव, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली

प्रकाशन दल
नवीन कुमार, राधा, जय भगवान

SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
वरुण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, दिल्ली–110025

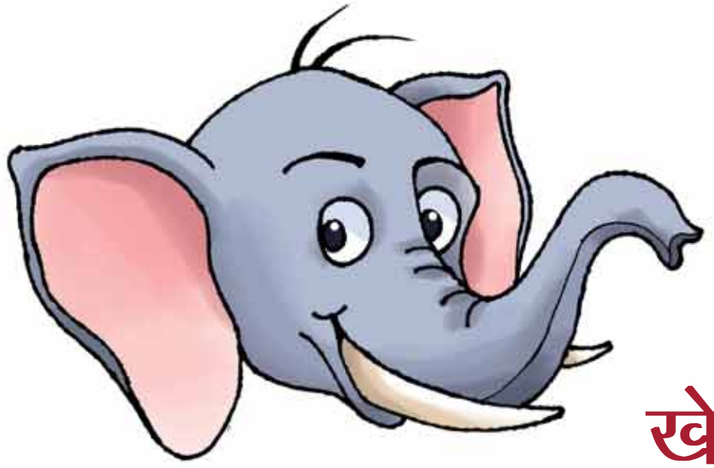

खेल खेल में—भाग 1

कहानी	पृष्ठ संख्या
1. अन्दर बाहर	1
2. बड़ा छोटा	5
3. लम्बा छोटा	9
4. ऊपर नीचे	13
5. छम छमा छम	17

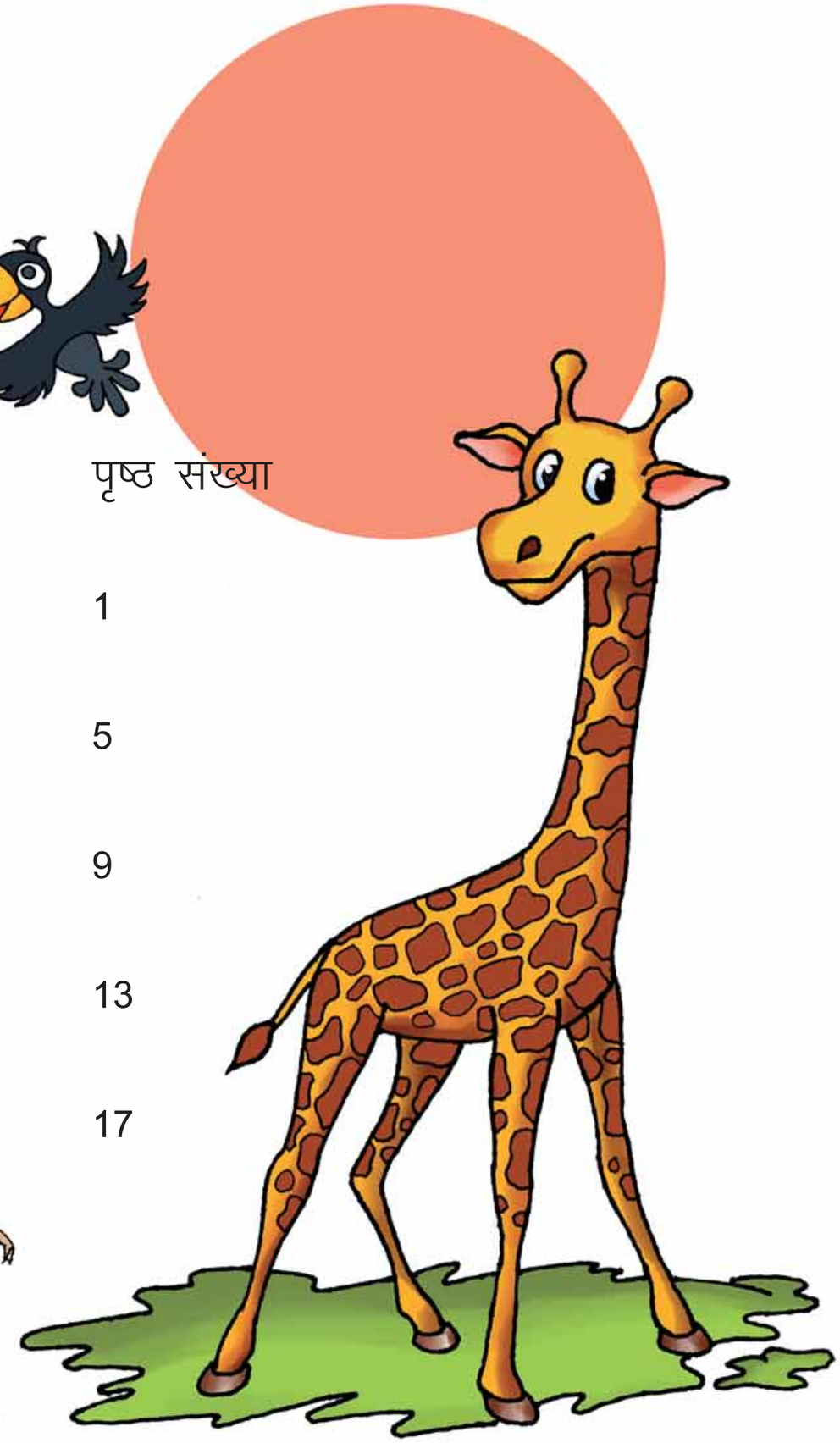

अन्दर बाहर

राहुल घर के अन्दर
पिया घर के बाहर।

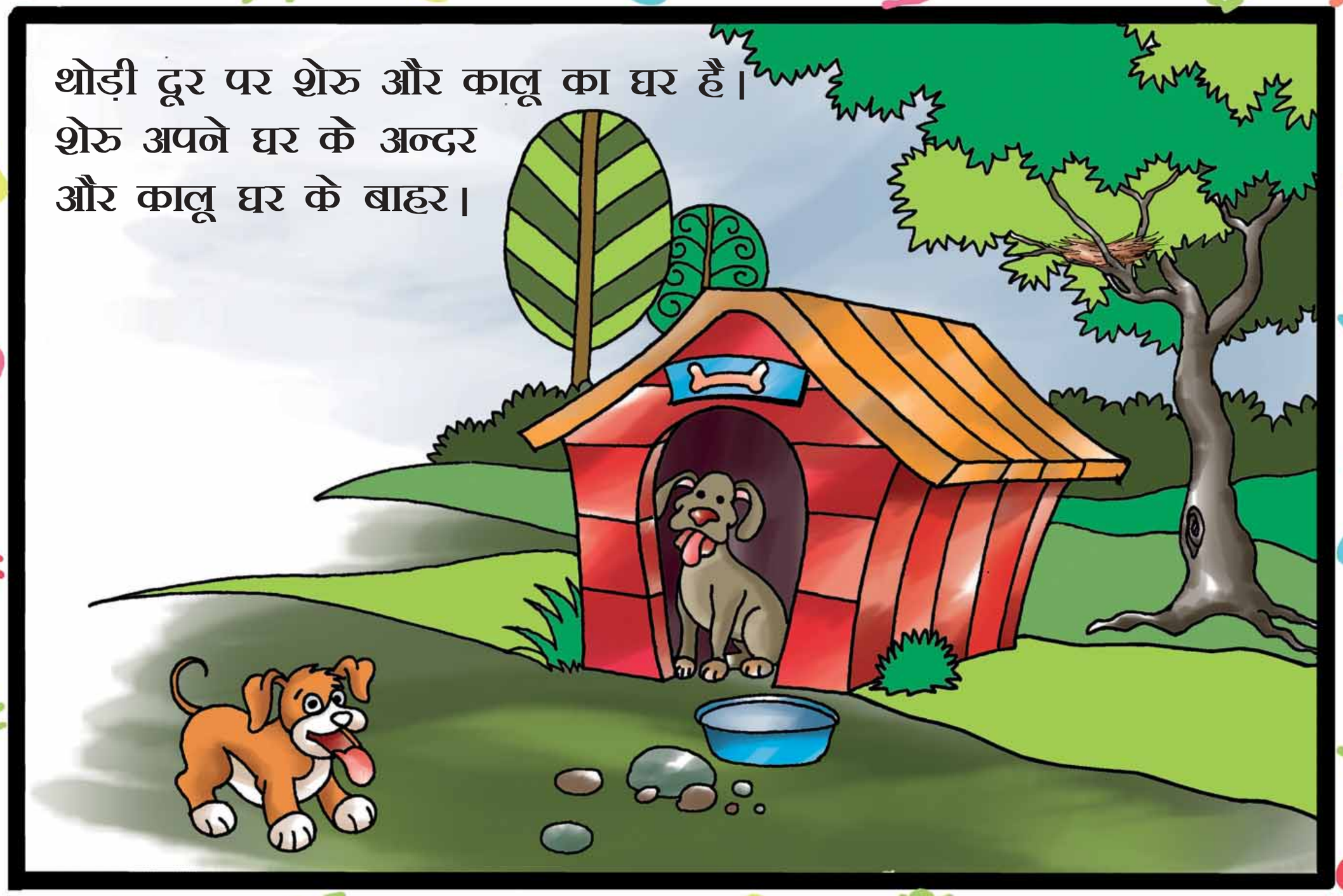

थोड़ी दूर पर शेरु और कालू का घर है।
शेरु अपने घर के अन्दर
और कालू घर के बाहर।

उधर ही पेड़ पर चिड़िया का घोसला है।
छोटी चिड़ियाँ घोंसले के अन्दर और बड़ी चिड़िया घोंसले के बाहर।

बड़ा छोटा

बड़ा सा हूं मैं,
बड़े बड़े कान हैं मेरे,
बड़े बड़े दांत हैं मेरे।

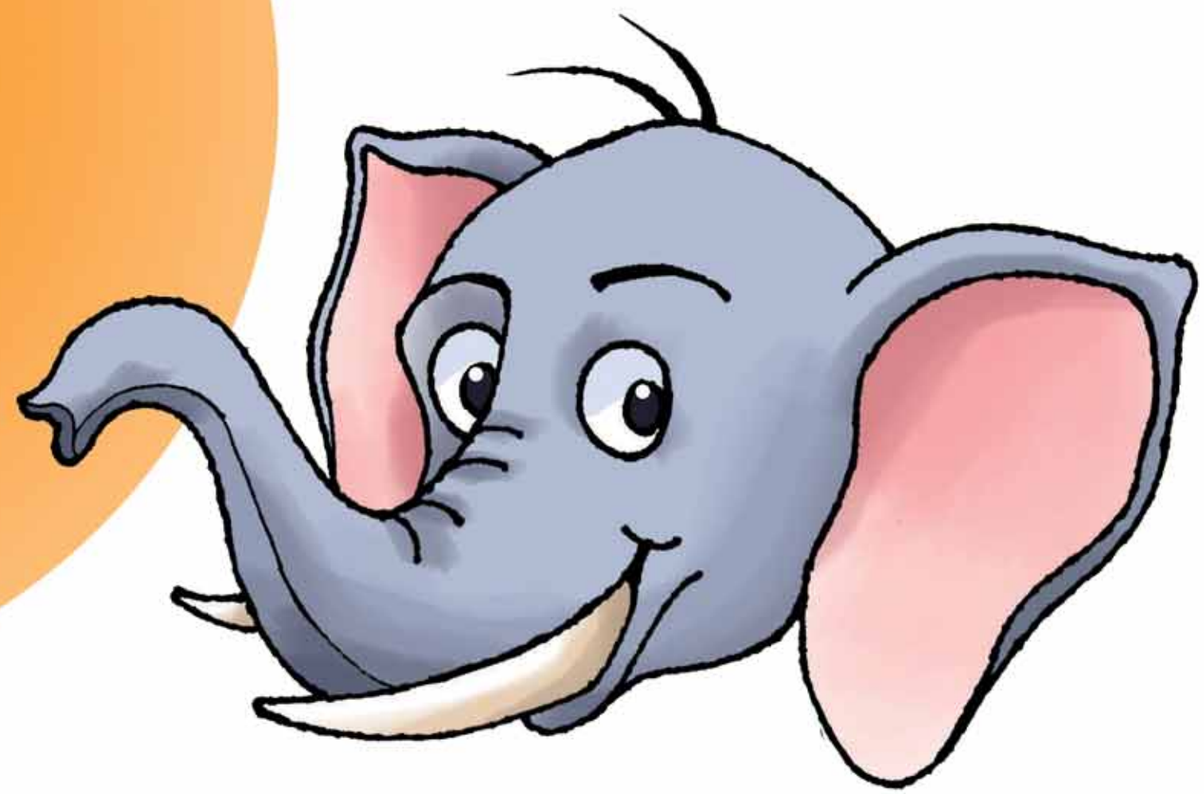

गन्ना मुझे है पसंद,
अब बताओ क्या मैं हूं
आपकी पसंद ?

छोटा सा हूं मैं
छोटे से कान, छोटे से हैं दांत।

घर में कुछ मिल जाता,
कुतर कुतर मैं खा जाता।

लम्बा छोटा

मेरी जीभ लम्बी है,
लेकिन मैं मेढक नहीं हूं
मेरी गर्दन लम्बी है,
मगर मैं बोतल नहीं हूं।

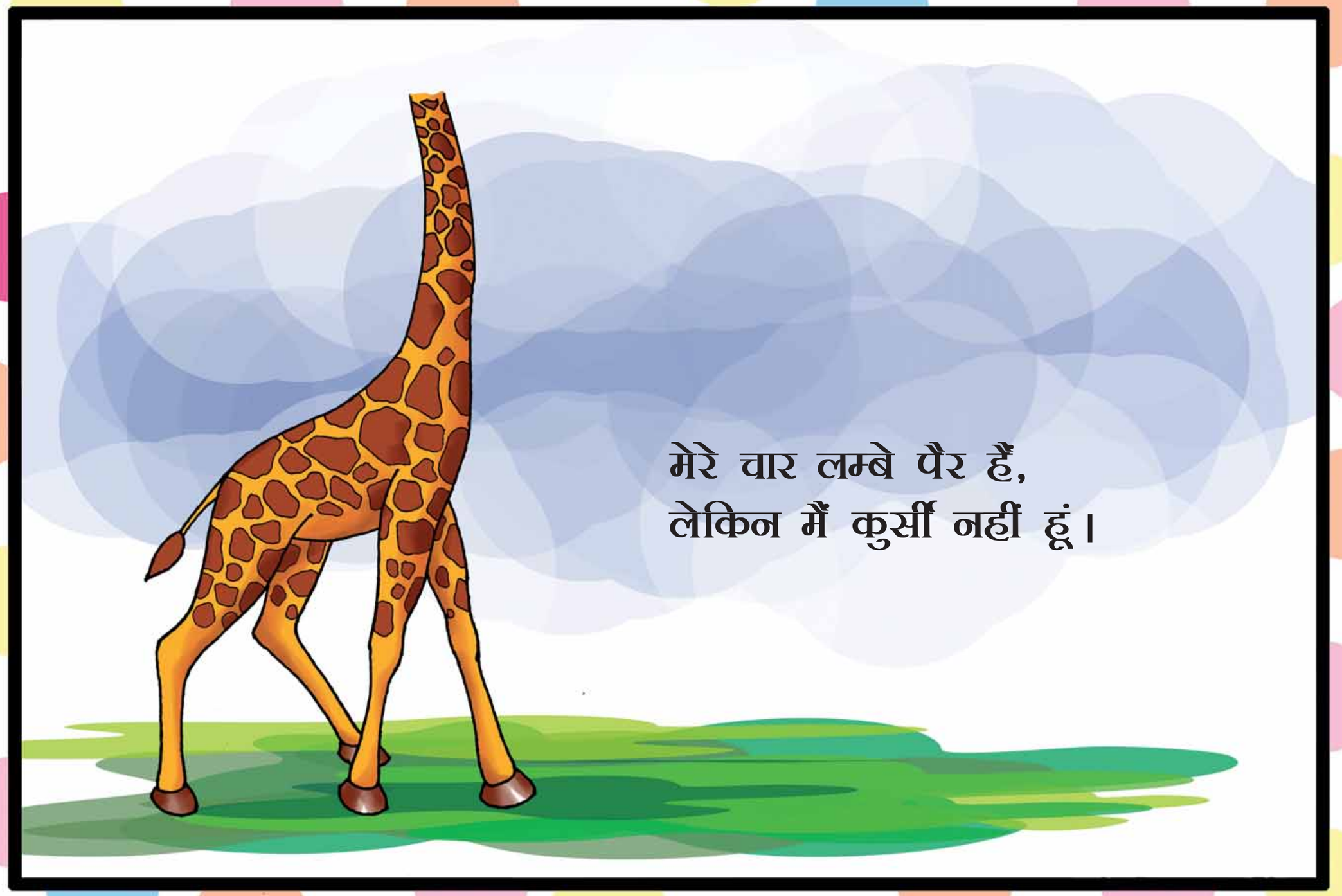

मेरे चार लम्बे पैर हैं,
लेकिन मैं कुर्सी नहीं हूं।

मेरी पूंछ छोटी है,
लेकिन मैं बकरी नहीं हूं।

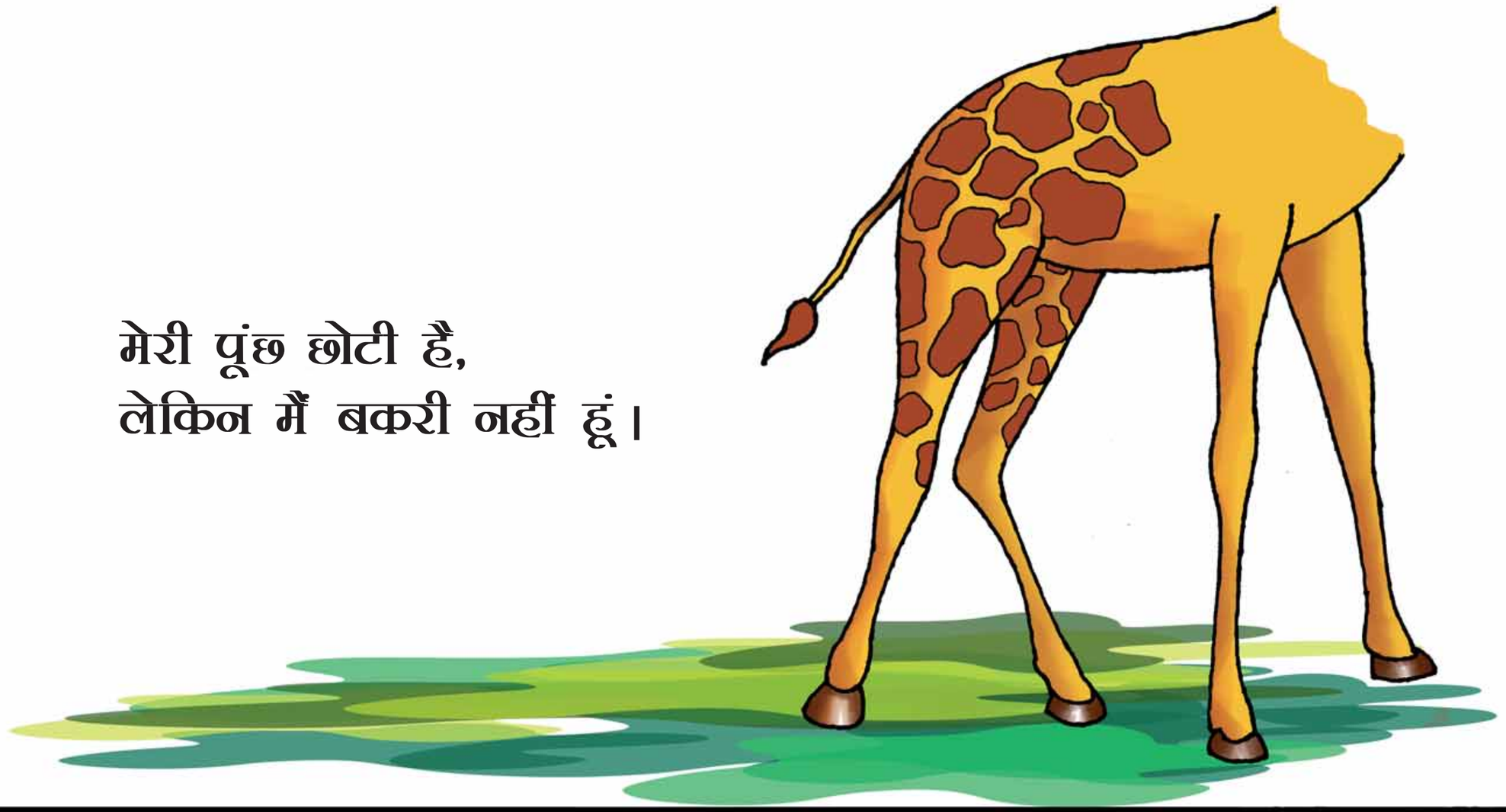

मेरे कान छोटे हैं,
लेकिन मैं चूहा नहीं हूं।

लम्बा भी हूं छोटा भी हूं,
बताओ कौन हूं मैं ?

ऊपर नीचे

मटकी टंगी थी ऊपर। करण खड़ा था नीचे,
देखो दोस्त भी आ गए, उसके पीछे पीछे।

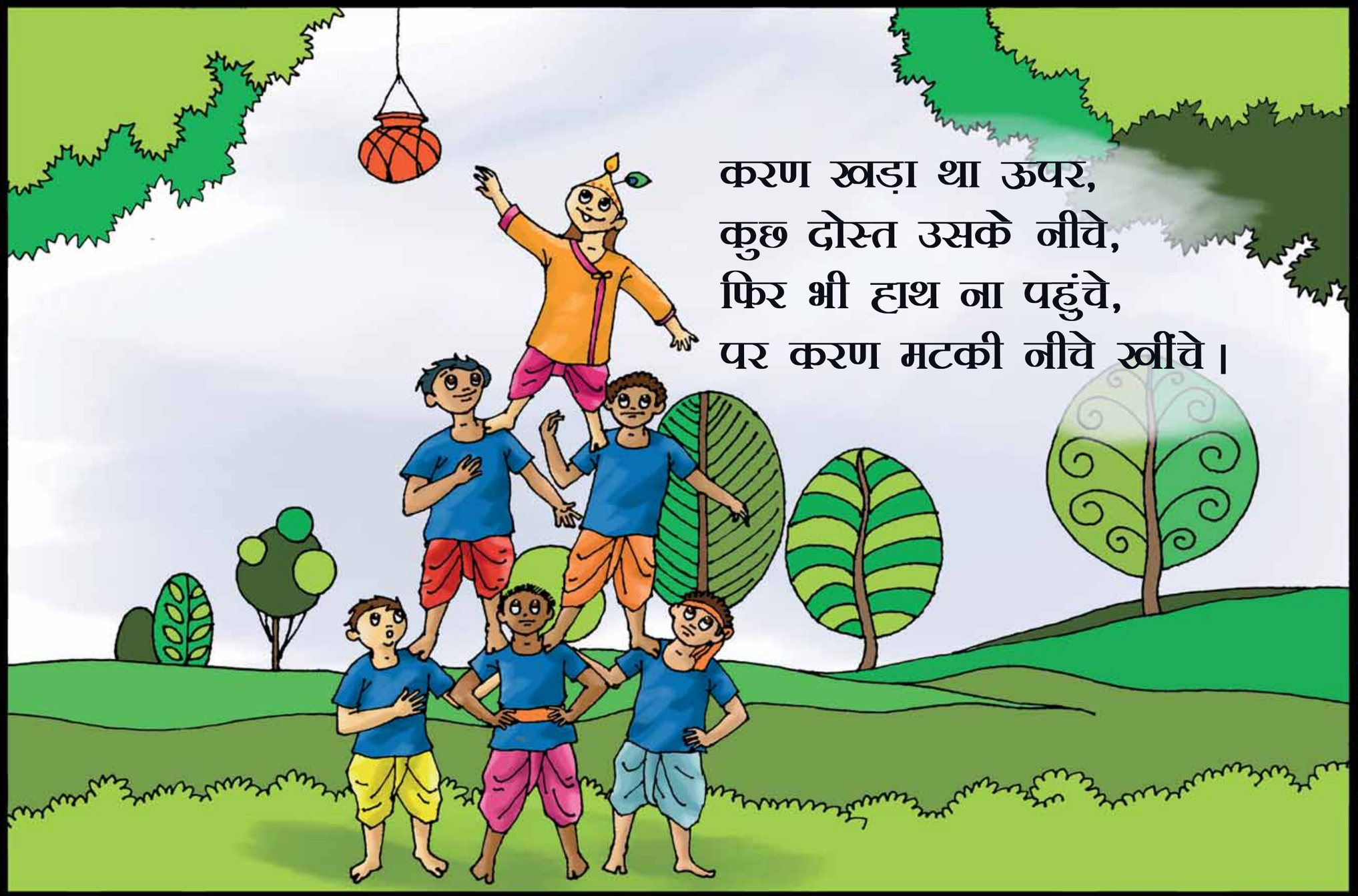

करण खड़ा था ऊपर,
कुछ दोस्त उसके नीचे,
फिर भी हाथ ना पहुंचे,
पर करण मटकी नीचे खींचे।

ऊपर पहुंचा करण,
लाया मटकी नीचे,
मुझे भी दो, मुझे भी दो,
वे एक-दूसरे से खींचें।

खाया माखन जमकर, खूब उड़ाई मौज,
करण लेकर चला गया, अपने दोस्तों की फौज।

छम छमा छम

छम छमा छम बरसा पानी
देख रहे रिंकू और नानी।

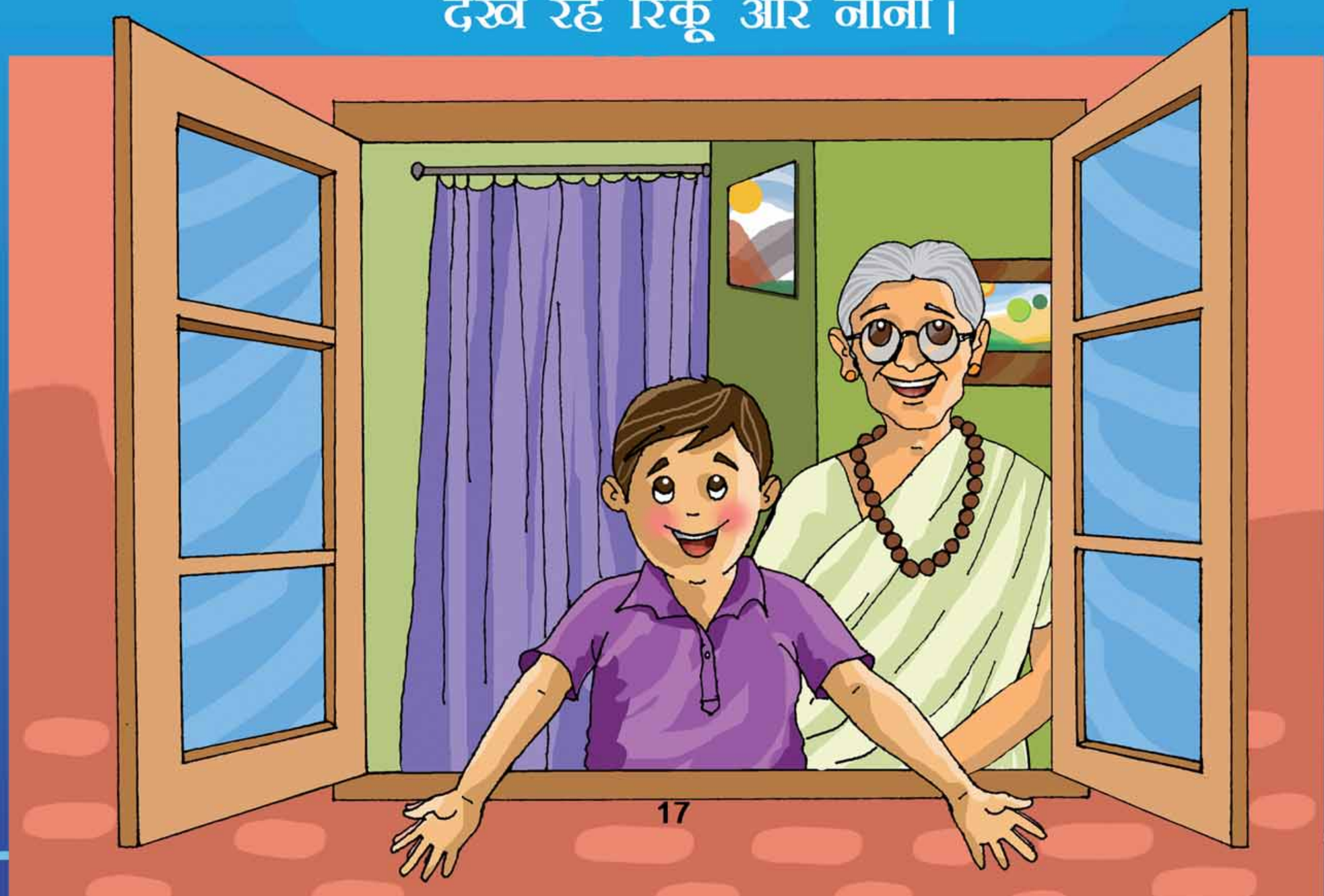

रिंकू ने नानी से पूछा,
कहाँ जाता बारिश का पानी ?

नानी बोली देखो रिंकू
वर्षा के बाद,
जब सूरज मियां किरणें फैलाता,
पानी जाकर ऊपर बादल बन जाता।

जब ये बादल मोटे हो जाते,
छम छम पानी बरसा जाते।

बच्चों तक कहानियाँ कैसे पहुँचाएं?

पढ़ने से पहले–

1. किताब का परिचय दें (शीर्षक को पढ़ें, लेखक का नाम बताएँ।)
2. अनुमान लगाने हेतु प्रश्न पूछें। जैसे–
   - आपके हिसाब से मुख्य पात्र कौन है?
   - आपको क्या लगता है कि मुख्य पात्रों के साथ क्या हुआ होगा?
   - क्या आपके घर पर भी फलां चीज है? (बच्चों की ज़िंदगी से जोड़ें)
   - क्या आपके साथ भी कभी ऐसा हुआ है? (बच्चों की ज़िंदगी से जोड़ें)

मौखिक रूप से कहानी सुनाना–

1. हाव–भाव और आवाज में उतार–चढ़ाव के साथ कहानी सुनाएँ।
2. कहानी में आए नए शब्दों पर बच्चों के साथ चर्चा करें।

पुस्तक पढ़ने के दौरान–

1. हाव–भाव के साथ धीरे–धीरे और स्पष्ट रूप से बोलकर पढ़ें।
2. अनुमान लगाने वाले प्रश्न पूछें। जैसे, बताइए आगे क्या होने वाला है?
3. यदि पढ़ते समय कहानी में कुछ नए शब्द आते हैं, तो बच्चों को उन्हें संदर्भ के अनुसार समझने व उनके अर्थ का अनुमान लगाने के लिए प्रेरित करें।

पढ़ने के बाद–

1. समीक्षा करें कि किताब में क्या हुआ था? जैसे कौन? क्या? कहाँ? कब?
2. बच्चों से कहानी दोहराने के लिए कहें– पहले क्या हुआ, फिर क्या हुआ? आगे क्या होने वाला होगा?
3. क्यों वाले प्रश्न पूछें: आपके अनुसार उस पात्र ने ऐसे क्यों किया होगा? लेखक ने यह कहानी क्यों लिखी होगी?
4. बच्चों के द्वारा लगाए गए अनुमानों की समीक्षा करें। क्या वे अनुमान सही थे?

अपनी किताबों का ध्यान कैसे रखें?

बच्चों को किताबें घर पर पढ़ने के लिए भी देनी चाहिएँ जिससे खाली समय में भी वे अपने पढ़ने की आदत को जारी रख सकें।

शिक्षक बच्चों को सिखाएँ कि वे किताबों के मित्र होने के साथ–साथ उनके डॉक्टर भी हैं। जैसे–हमें चोट लगने पर डॉक्टर मरहम/पट्टी करके ठीक करता है वैसे ही पढ़ने के दौरान यदि किताबें फट जाएँ तो बच्चों को किताबों का डॉक्टर बनकर उनकी मरम्मत करनी चाहिए। इसके अलावा किताबें लम्बे समय तक ठीक और पढ़ने योग्य बनी रहें इसके लिए उनकी सुरक्षा और समय–समय पर उनकी देखभाल करना अनिवार्य है। कक्षा में सर्व–सहमति से कुछ नियम बनाए जा सकते हैं।

- किताबें साफ़ हाथों से ही छुएँ।
- किताब के पन्ने ध्यान से पलटें ताकि वे फटें नहीं।
- किताबों को ख़राब मौसम, धूल, कीड़े–मकौड़े या जानवरों की पहुँच से दूर रखें।
- जब किताब घर पर ले जाएँ तो उसे बहुत छोटे बच्चों और पालतू जानवरों से दूर रखें।
- किताबों पर न कुछ लिखें और न ही पेन/पेन्सिल चलाएँ।

- खाने–पीने की चीज़ों को किताबों से दूर रखें।
- किताब से स्टीकर/कवर या कोई पन्ना न खींचें और न ही फटने दें।
- किताबों को साफ़ या सुरक्षित रखने के लिए, पढ़ने के बाद उन्हें सुरक्षित स्थान पर रखें।
- किताब के पन्ने पलटने के लिए पानी/थूक का प्रयोग न करें।
- किताबों को मोड़कर न पढ़ें और रखते समय खुली न छोड़ें।
- किताबें फटने या ख़राब होने पर शिक्षक या अभिभावक की मदद से उसकी मरम्मत करें।

यदि समय–समय पर शिक्षक इन सभी नियमों पर बच्चों से बातचीत करें और उन्हें इनके महत्त्व समझाएँ तो बच्चे बहुत जल्दी किताबों की देखभाल करना और उनका अच्छे से रखरखाव करना सीख जाते हैं।
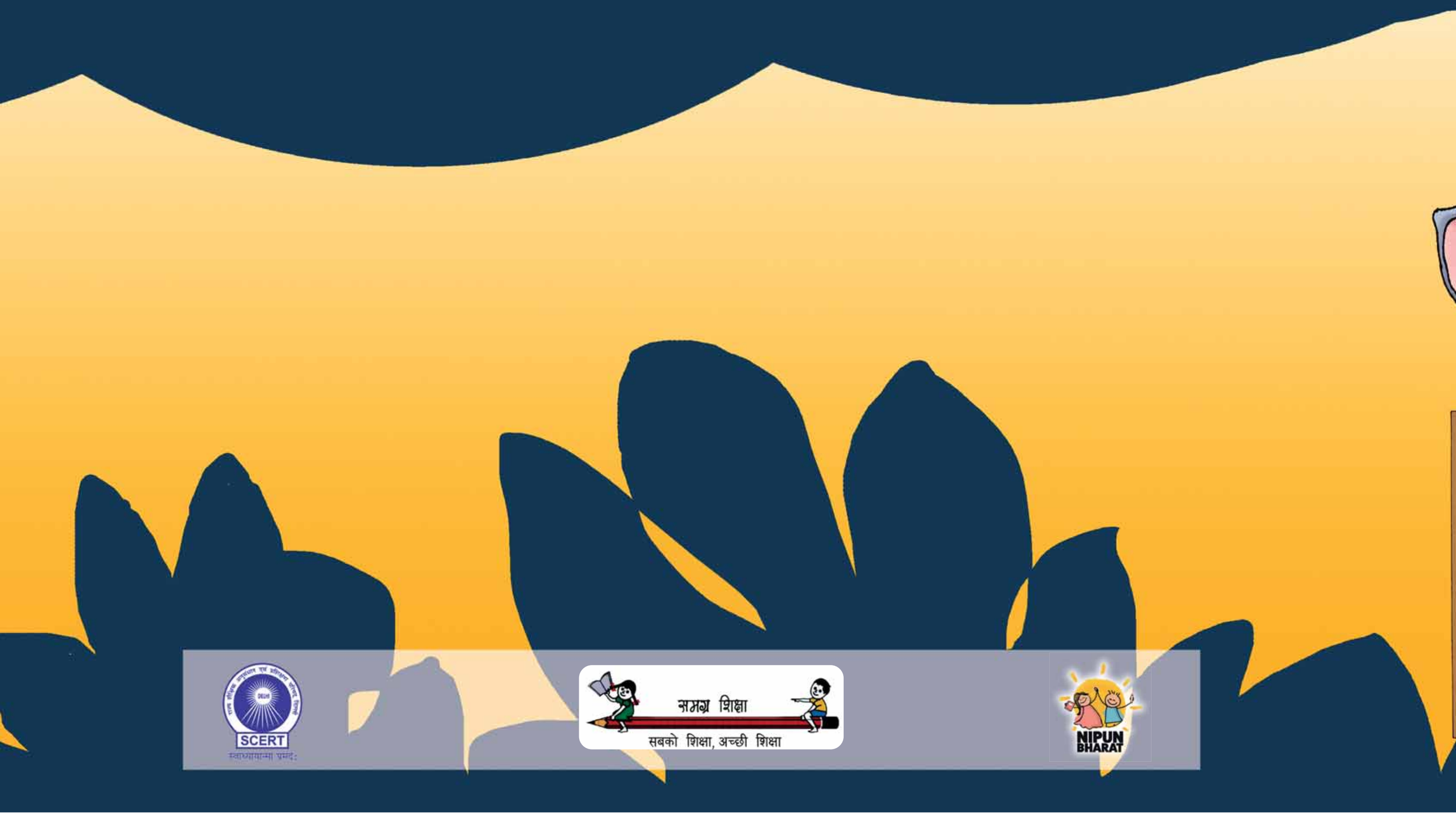
ISBN 978-93-93667-28-1